अभिज्ञानशाकुन्तलम् के तृतीय अङ्क का सारांश

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

हाथ में कुश लिये हुये यजमान का शिष्य प्रवेश करता है और सूचना देता है कि राजा द्वारा रक्षा किये जाने पर आश्रम की सभी क्रियायें निर्विघ्न सम्पन्न हो रही हैं। आकाशभाषित द्वारा यह सूचना मिलती है कि शकुन्तला धूप के आघात से अत्यन्त अस्वस्थ हो गयी है। उसी समय मदनावस्था में राजा प्रवेश करता है।

"उस धूप की वेला में शकुन्तला अपनी सखियों के साथ प्रायः लतावलयों से युक्त मालिनी नदी के तट पर व्यतीत करती है"- ऐसा सोच कर राजा बेंत की लता से आवृत लतामण्डप में पहुँचता है। वहाँ वृक्ष की शाखाओं की ओट से अपनी प्रियतमा को देखकर उसके नेत्र निर्वाणसुख को प्राप्त कर लेते हैं। शकुन्तला पुष्पशय्या पर पड़ी है और सखियाँ उसकी सेवा में तल्लीन हैं। वह छिपकर प्रेयसी और उसकी सखियों के विश्वस्त वार्तालाप को सुनता है। लता-मण्डप में दोनों सखियाँ शकुन्तला से यह जानने को उत्सुक हैं कि उसके सन्ताप का मूल कारण काम है अथवा ग्रीष्मतप। सखियों के अनुरोध पर निष्कपट हृदया शकुन्तला स्वीकार करती है कि तपोवन के रक्षक राजर्षि दुष्यन्त के प्रति वह आकृष्ट हो गयी है और उसको प्राप्त करने की उसके हृदय में तीव्र लालसा है। उसकी कृशता का मूल कारण यही है।

प्रियंवदा प्रसन्न होती है कि उसकी सखी ने अनुरूप व्यक्ति के प्रति ही प्रेम किया है। प्रियंवदा शकुन्तला को एक प्रेमपत्र लिखने का परामर्श देती है। परन्तु शकुन्तला का मन अवज्ञा के भय से आशङ्कित हो जाता है। उधर वृक्ष की ओट में छिपा हुआ राजा अत्यन्त प्रसन्न होता है और मन ही मन कहता है कि "भीरु! जिससे तुम अपमान की आशङ्का कर रही हो वह तुम्हारे समागम के लिये उत्सुक बैठा है"। शकुन्तला सखियों के आग्रह से नलिनी-पत्र पर नाखूनों से राजा को प्रेमपत्र लिखती है।

राजा सहसा उपस्थित होकर शकुन्तला के प्रति अपने उत्कट मनोविकार को प्रकट कर देता है। प्रणयी युगल राजा और शकुन्तला को एकान्त में छोड़कर दोनों सखियाँ (प्रियंवदा और अनसूया) वहाँ से चली जाती हैं। राजा और शकुन्तला काम-व्यापार मे संलग्न हो जाते हैं। रात्रि होने लगती है। तभी शकुन्तला की अस्वस्थता का समाचार पाकर शान्ति जल लिये हुए आर्या गौतमी आती हैं। राजा वृक्ष की ओट में छिप जाता है। गौतमी के साथ शकुन्तला आश्रम की ओर प्रस्थान करती है। इसी बीच आकाशवाणी सुनाई पड़ती है कि राक्षसों की भयोत्पादक छायायें आश्रम का बार-२ चक्कर लगा रही हैं। ऐसा सुनकर कामाभिभूत होने पर भी राजा राक्षसों के विघ्न को दूर करने के लिये प्रस्थान कर देता है।